उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धान्त

नवीन चन्द्र उप्रेती
प्रधानाचार्य
रा उ मा वि घसाड, पिथौरागढ

बजटसेट

निश्चित आय तथा दोनों वस्तुओं की कीमत दी होने पर उपभोक्ता केवल उन्हीं वण्डलों को खरीद सकता है जिनका मूल्य उसकी आय से कम या आय के बराबर हो। उपभोक्ता के लिए उपलब्ध बण्डलों के सेट को बजटसेट कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में – बजटसेट उन सभी बण्डलों का संग्रह है जिन्हें उपभोक्ता प्रचलित बाजार कीमत पर खरीद सकता है।

जैसे – माना उपभोक्ता की M आय है तथा दोनों वस्तुओं की कीमत P1तथा P2है। माना उपभोक्ता वस्तु 1 की x1 ईकाइयां खरीदना चाहता है तो उसे कुल मिलाकर (कीमत x वस्तु संख्या) P1 X1 धन व्यय करना पडेगा । इसी प्रकार यदि वस्तु 2 की x2 ईकाइयां खरीदना चाहता है तो उसे P2 X2 धन व्यय करना पडेगा। इस प्रकार उपभोक्ता को x1 तथा x2 वस्तुओं के बण्डल खरीदने में P1 X1 + P2 X2 धनराशि व्यय करनी होगी । वह, यह बण्डल तभी खरीद पायेगा जब उसके पास कम से कम P1 X1 + P2 X2 धनराशि होगी।

दूसरे शब्दों में उपभोक्ता कोई (x1 x2) बण्डल निम्न स्थिति में खरीद सकता है। $P1\ X1 + P2\ X2 \leq M$

इन सभी बण्डलों के संग्रह को बजटसेट कहते हैं।

बजटरेखा – उपभोक्ता की आय और दोनों वस्तुओं की कीमत से जो रेखा (वक्र) तैयार होती है। उसे हम बजटरेखा कहते हैं। यदि हम त्रिभुज के आधार पर एक वस्तु पर व्यय दूसरी भुजा लम्ब पर वस्तु 2 पर व्यय रखें तो कर्ण पर उपभोक्ता की आय Mप्राप्त होती है ।

P1 वस्तु 1 की कीमत P2 वस्तु 2 की कीमत X1 वस्तु की मात्रा

X2 वस्तु 2 की मात्रा

M = उपभोक्ता की आय

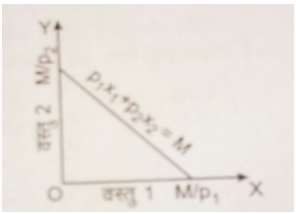

बजटरेखा एक सीधी रेखा है जिसका समस्तरीय अन्तःखण्ड $\frac{M}{P1}$ तथा ऊर्ध्वाधर अन्तःखण्ड M/P2 है । समस्तरीय अन्तःखण्ड उस बण्डल का प्रतिनिधित्व करता है जिसको उपभोक्ता उसी स्थिति में खरीद सकता है जब वह अपनी सारी आय वस्तु 1 पर व्यय कर दे इसी प्रकाक ऊर्ध्वाधर अन्तःखण्ड उस बण्डल का प्रतिनिधित्व करता है जिसे उपभोक्ता उस स्थिति में खरीद सकता है जब वह अपनी सारी आय वस्तु 2 पर व्यय कर दे।

बजटरेखा की प्रवणता नीचे की ओर होती है। क्योंकि यदि उपभोक्ता किसी 1 वस्तु की 1 अतिरिक्त ईकाई का उपभोग करना चाहता है तो उसे दूसरी वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना होगा। बजट रेखा की प्रवणता की माप $= \frac{P1}{P2}$ जहां P1 तथा P2 उपभोक्ता द्वारा क्रय की जाने वाली वस्तुओं की कीमतें हैं।

एक उपभोक्ता दो वस्तुओं का उपभोग करने का इच्छुक है।दोनों वस्तुओं की कीमत क्रमशः 4रु व 5रु है। उपभोक्ता की आय 20 रु है। तो 1 बजटरेखा का समीकरण है – P1 X1 + P2 X2 = M

उपभोक्ता यदि अपनी सम्पूर्ण आय वस्तु 1 पर व्यय कर दे तो उसकी कितनी मात्रा का उपभोग कर सकता x1 = M/P1 - P2/P1 X 2 (बजट समीकरण से)

= 20/4 – 5/4 x 0 (X2 = 0 क्योंकि उपभोक्ता केवल वस्तु 1 ले रहा है।)

= 5 -0=5 ईकाइयां

01 – यदि उपभोक्ता अपनी सम्पूर्ण आय वस्तु 2 पर व्यय कर दे तो x 2 = M/P2 – P1/P2 X1 (बजट समीकरण से)

= 20/5 – 4/5 X 0

4-0 = 4 ईकाइयां

4 बजटरेखा की प्रवणता (ढाल) = P1/P2 = -4/5= 0.8

प्रश्न– यदि उपभोक्ता की आय बढकर रु 40 हो जाती है परन्तु कीमत अपरिवर्तित रहती है तो बजट रेखा में क्या परिवर्तन होता है।

1 यदि उपभोक्ता की आय रु 20 से बढकर रु 40 हो जाती है तो यदि वह वस्तु 1 की क्रय की गई मात्रा = 40/4 = 10 ईकाइयां

2 यदि वह सम्पूर्ण आय वस्तु 2 पर व्यय करेगा तो वस्तु 2 की क्रय की गई मात्रा = 40/5 ईकाइयां= 8 ईकाइयां

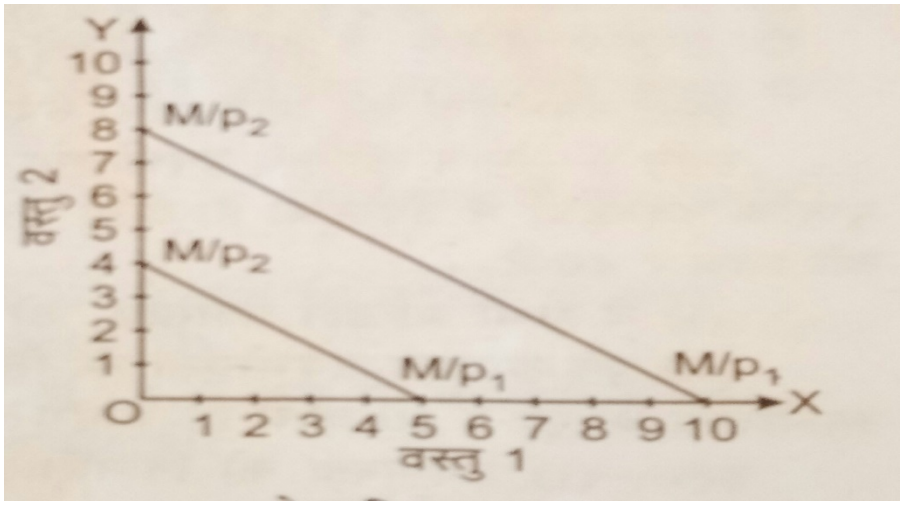

04 मान लीजिए कोई उपभोक्ता अपनी पूरी आय का व्यय करके वस्तु 1 की 6 ईकाइयों तथा वस्तु 2 की 8 ईकाइयां खरीद सकता है दोनों वस्तुओं की कीमत रु 6 रु 8 है तो उपभोक्ता की आय कितनी है

P1 X 1 + P2 X =M

6x 6 + 8x8 = M

36+64 = 100

अतः उपभोक्ता की आय 100 रुपयेहै।

एकदिष्ट अधिमान–

यदि बण्डल 10, 09, व 09,09 बण्डल उपभोक्ता के लिए उपलब्ध है तो पहले बण्डल में दूसरे बण्डल की अपेक्षा 1 वस्तु अधिक है और उपभोक्ता इस अधिक वस्तु वाले बण्डल को अधिक पसन्द करेगा। उपभोक्ता की इसी प्राथमिकता को एकदिष्ट अधिमान कहते हैं।

मांग तालिका

एक निश्चित समय में किसी वस्तु की अविभिन्न मात्राओं की सूची है जो किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा विभिन्न मूल्यों पर खरीदी जाती है।

मांग तालिका के प्रकार –

मांग तालिका दो प्रकार की होती है।

1 – व्यक्तिगत मांग तालिका –

जो एक व्यक्ति द्वारा किसी दिए हुए समय में एक काल्पनिक बाजार में विभिन्न कीमतों पर क्रय की जाने वाली वस्तु की विभिन्न मात्राओं को प्रदर्शित करती है।

व्यक्तिगत मांग तालिका

दूध की कीमत (प्रति लीटर)	दूध की मांग (लीटर में)
4.00 रुपये	2
3.00 रुपये	3
2.00 रुपये	6

2 – बाजार मांग तालिका –

बाजार मांग तालिका एक वस्तु के बाजार में कुल क्रेताओं में मांग का योग है।

प्रति लीटर दूधकी कीमत (रुपये में)	विभिन्न उपभोक्ताओं द्वारा की गई मांग मात्रा (लीटर में)				कुल मांग (लीटर में)
	A	B	C	D	
5	1	2	1	1	5
3	4	3	4	3	14
2	5	6	5	5	21

मांग का नियम – अर्थ –

मांग का नियम बताता है कि किसी वस्तु की कीमत मे वृद्धि होने से उसकी मांग कम हो जाती है तथा कीमत में कमी होने से मांग बढ जाती है। इस प्रकार मांग व वस्तु के मूल्य के बीच विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।

परिभाषा –

प्रो0 मार्शल के अनुसार –

''गिरते मूल्य के साथ साथ मांग की मात्रा बढती जाती है। तथा बढते मूल्य के साथ–साथ मांग की मात्रा घटती जाती है। ''

सैमुअल्सन के अनुसार –

''जब किसी वस्तु की कीमत ऊंची कर दी जाय (अन्य बातें स्थिर होने पर) तो उस वस्तु की मांग कम हो जायेगी।''

मांग का नियम एक गुणात्मक कथन है।

नियम की विशेषताएं –

मांग के नियम के सम्बन्ध में निम्न बातें स्पष्ट होती हैं –

1 – यह नियम अन्य बातें समान रहने पर ही क्रियाशील रहता है।

2 – कीमत के बढने पर मांग कम और कीमत के घटने पर मांग बढती है।

उदाहरण –

सन्तरे की मांग तालिका

सन्तरे की कीमत (प्रति दर्जन)	सन्तरे की मांग (दर्जन में)
10	60
20	50
30	40

तालिका से स्पष्ट है कि मूल्य बढने पर सन्तरे की मांग घटती है।

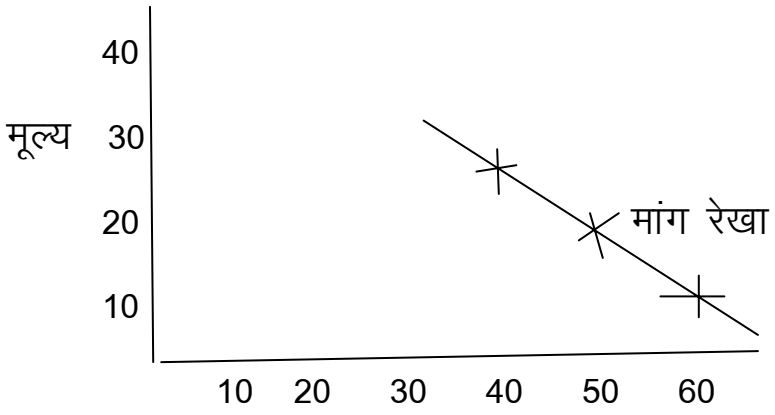

मांग के नियम की क्रियाशीलता के निम्न कारण हैं –

1 – सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्रियाशीलता –

इस नियम से ज्ञात होता है कि जैसे – जैसे किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों का प्रयोग किया जाता है उपभोक्ता को प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता कम होती जाती है। अतः व्यक्ति किसी वस्तु की अधिक इकाइयां तभी क्रय करेगा जबकि वस्तु की कीमत में कमी होगी ।

2 – प्रतिस्थापन प्रभाव –

दो वस्तुओं का जिनका एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है एक की कीमत कम होने पर लोग उसका प्रयोग बढा देते हैं उसकी मांग बढ जाती है। जैसे – चाय व कॉफी में कॉफी की कीमत कम हो जाय तो काफी की मांग बढ जाती है।

3 – आय प्रभाव –

वस्तु की कीमत कम हो जाने पर उपभोक्ता की आय में बचत हो जाती है जिससे वह वस्तु की अतिरिक्त मात्राओं को खरीद लेता है और वस्तु की मांग बढ जाती है।